eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर की रचनाओं का संवेगात्मक चिन्तन – एक अध्ययन

[1]अभिलाषा सिंह
[1]शोधार्थी, जे0 एस0 यूनिवर्सिटी, शिकोहाबाद

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

कबीरदास जी का काव्य साहित्य उनके व्यक्तित्व का मूर्तरूप है। उनकी निर्भीकता, स्पष्टवादिता, क्रॉतिकारिता और अहंभाव आदि सभी विशेषताएँ उनके काव्य में झलकती है। जो युगों–युगों तक प्रेरणा देती रहेंगी। कबीरदास जी के प्रभावशाली अद्वितीय व्यक्तित्व ने स्वाभाविक रूप में उनके काव्य में जो भी युगान्तकारी प्रभाव शक्ति का सृजन किया है जो आज के दौर में भी अति प्रासंगिक है। कबीरदास जी सर्वप्रथम मानवतावादी हैं इसीलिए उनके काव्य में मानवीय संवेगों को भावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त किया गया है।

बीज शब्द – कबीरदास, रचनाएं, संवेगात्मक चिन्तन, जीवन दर्शन।

Introduction

डॉक्टर विजयेन्द्र स्नातक ने कबीर के मानवतावाद के विषय में विचार व्यक्त करते हुये लिखा है– कबीर ने अपने जीवन में दूसरों के लिए कष्ट को स्वीकार किया था उनका जीवन जनता के उद्भोदन में ही व्यतीत हुआ। वह अपने लिए नहीं, संसार के लिए रोते और विलाप करते थे। उन्होंने साईं के सवजीव के लिए अपना अस्तित्व समर्पित कर दिया था और उन्होने अपने संवेगों को इस दोहे द्वारा व्यक्त किया है–

'सुखिया सब संसार है , खाय अरू सोवे।
दुखिया दास कबीर है , जगे अरू रोवे।।

कबीर सभी मनुष्यों को एक ही शक्ति से उत्पन्न मानते हुए उसमें न तो किसी प्रकार का भेदभाव देखते थे और न देखने को कहते थे। उन्होंने जीवन में समानता, दया, करूणा, संतोष, प्रेम, सदाचार पूर्ण जीवन, सत्य, अहिंसा आदि संवेगात्मक भावनाओं का सूत्रपात किया है। हम यह कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि कबीर जैसा असाधारण व्यक्ति अपने शब्द ऐसी साधारण सी बात कहने में खर्च नहीं करेगा उनका एक–एक शब्द सागर सी गहराई लिए हुए है। इसी प्रकार उन्होने इस दोहे के माध्यम से दुःख और सुख नामक संवेगो को जितनी गहराई से मानवीय मूल्यों में जोड़ने का प्रयास किया है –

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय।।

©IJARMS JOURNAL, 2024

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

इस दोहे के माध्यम से कबीरदास जी ने बताने का प्रयास किया है कि दुःख के समय सभी भगवान को याद करते हैं पर सुख में कोई याद नहीं करता है। यदि सुख में भी भगवान को याद किया जाये तो दुःख हो ही क्यों।

कबीर दास जी ने अपनी रचनाओं में न सिर्फ मानव जीवन के मूल्यों की व्याख्या की है बल्कि भारतीय संस्कृति, धर्म आदि का भी बेहद अच्छे तरीके से वर्णन किया है जो व्यक्ति कबीरदास जी के उपदेशों अथवा विचारों को अपने जीवन में उतार लेते हैं उनके विचार लोगों मन में न सिर्फ जीवन के प्रति सकारात्मकता का भाव पैदा करते हैं बल्कि उन्हे अपने जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देते हैं वह अपनी बात को सरल ढ़ंग से लोगों तक पहुॅचाने का प्रयास करते हैं और कहते हैं हमें ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जो लोगों को शीतल बना सके और उनमें स्नेह पैदा कर सके। इस दोहे के माध्यम से वह बताना चाहते हैं–

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।।

प्रेम का समर्थन– समाज सुधार के लिये प्रेम आवश्यक है। प्रेम से समाज की बुराइयों को मिटाया जा सकता है। पुस्तक पढ़ने से कोई पंडित नही हो जाता।

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय।।

कबीर दास जी ने अपनी अनूठी रचनाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान और साथ ही अपने दोहों से समाज के व्यक्तियों में फैली तमाम तरह की कुरीतियों, कुण्ठाओं को भी दूर करने की कोशिश की गई है। कर्मकाण्ड, पाखण्ड एवं मूर्तिपूजा आदि का विरोध किया है। उन्होने हिन्दू और मुस्लिम धर्म में फैली धार्मिक कुरीतियों को उजागर करने का इस दोहे के द्वारा प्रयास किया है।

हिन्दू कहे मोय राम प्यारा है , तुर्क कहे रहमाना।
आपस में दोऊ लड़ी–लड़ी मुए , मरम न कोऊ जाना।।

कबीर कहते हैं हिन्दू राम के भक्त है और मुस्लिमों को रहमान प्यारा है, इसी बात पर दोनों लड़–लड़कर मौत के मुॅह में जा पहुॅचे तब भी दोनों में से कोई सच को न जान पाया।
हिन्दू–मुस्लिम एकता पर बल –

हिन्दू कहते हम बड़े, मुसलमान कह हम।
एक चने के दो दले, कुण जादा कुण कम।
हिंदू कहि मोहे राम पियारा, तुरक कहि रहमान,
आपस में दोउ लरि–लरि मुए, मरम न काहू जाना।।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर सच्चे समाज सुधारक थे। वे न हिन्दू थे ओर न ही मुसलमान वरन् एक सच्चे मानव और मानवता के पोषक संत थे। वे सच्चे धर्म निरपेक्ष भारतीय थे। वे किसी भी जाति , धर्म या महजब के पक्षधर नहीं थे। कबीर के समय की सामाजिक स्थिति से भी बदतर आज समाज की स्थिति है इसलिये उनके विचार और सिद्धान्त शांति के लिये आवश्यक हैं।

तिलक– शैन, वैष्णव और शाक्तों का तिलक लगाना भी कबीर को ढोंग ही प्रतीत होता था।

वेसनों भया तो क्या भया , बूझा नहीं विवेक,
छापा तिलक बनाय कर, दगध्या लोग अनेक।।

कबीर सभी व्यक्तियों को एक ही शक्ति से उत्पन्न मानते हुए उनमें न तो किसी प्रकार का भेद देखते थे और न देखने को कहते थे अर्थात् कबीरदास जी अपने संवेगों पर नियंत्रण करना भॅली–भॉति जानते थे। उन्होने अपने जीवन में समानता, दया, करूणा, संतोष, प्रेम, सदाचार पूर्ण जीवन, सत्य अहिंसा आदि मानवीय संवेगों का सूत्रपात किया है।

कबीर अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने संवेगों को व्यक्त करते हुये कहना चाहते हैं कि मन लोभ रूपी लहर को खत्म किये बिना सच्ची साधना सम्पन्न नहीं हो सकती है।

'' मन जाणै सब बात , जाणत ही औगुण करै।
काहे को कुसला , कर दीपक कूँ बै पड़ै।। ''

कबीर का यह भी मत है कि जब तक मन को नही मारा जाता तब तक आत्मा की शुद्धि नहीं हो सकती है। वे कहते हैं –''

सोच समझ अभिमानी चादर भई है पुरानी।
टुकड़े–टुकड़े जोरि जतन सो, सीके अंग लिपटानी
कर डारी मैली पापन से, लोभ मोह में सानी।
ना यह लागी ज्ञान को साबुन न धोई भल पानी
सारी उमर ओढ़ते बीती भली बुरी नहिं जानी।
संका मानि जानि जिय अपने यह है चीज बिरानी
कहत कबीर धरि राखु जतन से, फेर हाथ नहिं आनी।

कबीर दास जी कहते है कि जीवन की चादर मैली व पुरानी हो गई है जिसे लोभ और मोह ने मैला कर दिया है। इस मैली चादर को ज्ञान रूपी साबुन और शुद्ध पानी से धोया नहीं, सारी उम्र इसे ओढ़ते रहे, इसकी असलियत नहीं जान पाए। स्वयं के मन में शंका कीजिए और जान लीजिए यह दूसरों को दी हुई चीज है। इसे संभाल कर रखने की जरूरत है यह जीवन की चादर फिर हाथ नही आने वाली। यह पूरा पद इसी अन्तिम वाक्य के लिए उद्धत किया गया है– **'फेर हाथ नहिं आनी।'** पद में कबीर दास जी बताना चाह रहे हैं कि ये जीवन अमूल्य है एक बार जाने के बाद दोबारा नही मिलता।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

हिन्दी साहित्य के महाज्ञानी कबीरदास जी की वाणी को साखी, सबद, रमैनी तीन अलग–अलग रूपों में लिखा गया है, जो कि बीजक नाम से मशहूर है। वहीं कबीर ग्रन्थावली में उनकी रचनाओं का संग्रह देखने को मिलता है। यह राजस्थानी, पंजाबी, पूरबी, अवधी, ब्रजभाषा, खड़ी बोली समेत कई अलग–अलग भाषाओं का मिश्रण है। इसके साथ ही आपको यह भी बता दें कि कबीरदास जी द्वारा लिखी गई ज्यादातर किताबें दोहा और गीतों का एक विशाल संग्रह था जिसकी संख्या 72 थी। उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाओं में कबीर बीजक, सुखनिधन, होली, अगम, शब्द, बसंत, साखी और रक्त शामिल हैं। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि कबीर दास जी ने अपनी रचनाओं को बेहद सरल और आसान भाषा में लिखा है। उन्होनें अपनी कृतियों में बेबाकी से धर्म, संस्कृति एवं जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी राय रखी है।

उनकी रचनाओं में उनकी सहजता का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होने अपने दोहों के माध्यम से भी लोगों को संसार का नियम एवं जीवन जीने के तरीके के बारे में बताया है जो कि अतुलनीय और अद्भुत है।

निष्कर्षः– इन सभी रचनाओं के अतिरिक्त कबीरदास जी ने कई और महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं रचनाएँ की हैं जिनमें उन्होने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगों में विभिन्न मानवीय संवेगों को भरने के माध्यम से लोगों में विभिन्न कृतियों को पढ़ने से व्यक्ति मन में प्रेम, दुःख, साहचर्य, स्नेह, सहानुभूति, क्रोध, राग, द्वेष, भय, घृणा एवं खुशी जैसे विभिन्न संवेग उत्पन्न होते हैं। जो व्यक्ति के संवेगात्मक विकास को प्रभावी बनाते हैं। जिसके द्वारा व्यक्ति कबीरदास जी की रचनाओं को महसूस करके अपने संवेगों में ढ़ालकर अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है। जिससे वह अपने जीवन को सार्थक रूप देते हुये परमतत्व का साक्षात्कार करके स्वयं को उसमें विलीन करने योग्य बना सके।

सन्दर्भ सूची :–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. कबीर वाणी –जयदेव सिंह।
3. कबीर ग्रन्थावलीः (A.) श्यामसुन्दर दास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर।
5. डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक, कबीर।
6. एडम स्मिथ की किताब, वैलय ऑफ नेशन।
7. माचवे प्रभाकर 'कबीर' साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।